पंचम माला, खंड 18, अंक 11, सोमवार, 14 अगस्त, 1972/23 श्रावण, 1894 (शक)

Fifth Series, Vol. XVIII, No. 11, Monday, August 14, 1972/Sravana 23, 1894 (Saka)

लोक-सभा वाद-विवाद
का
संक्षिप्त अनूदित संस्करण

SUMMARISED TRANSLATED VERSION
OF
LOK SABHA DEBATES

[पांचवां सत्र
Fifth Session]

5th Lok Sabha

सत्यमेव जयते

Preservation Dt. 17-8-94
Fumigated On 16.2.87
Parliament Library

[खंड 18 में अंक 11 से 20 तक हैं
Vol. XVIII Contains Nos. 11 to 20]

लोक-सभा सचिवालय
नई दिल्ली
LOK-SABHA SECRETARIAT
NEW DELHI

मूल्य : दो रुपये

Price : Two Rupees

[यह लोक-सभा वाद-विवाद का संक्षिप्त अनूदित संस्करण है और इसमें अंग्रेजी/हिन्दी में दिये गये भाषणों आदि का हिन्दी/अंग्रेजी में अनुवाद है ।

This is translated version in a summary form of Lok Sabha Debates and contains Hindi/English translation of speeches etc. in English/Hindi]

विषय-सूची/CONTENTS

अंक 11, सोमवार, 14 अगस्त, 1972/23 श्रावण, 1894 (शक)

No. 11, Monday, August 14, 1972/Sravana 23, 1894 (Saka)

विषय	Subject	पृष्ठ/Pages
निधन सम्बन्धी उल्लेख	Obituary Reference	
श्रीमती मिनिमाता अगमदास गुरू का निधन	Death of Shrimati Minimata Agamadas Guru	1-6
श्रीमती इन्दिरा गांधी	Shrimati Indira Gandhi	2
श्री दशरथ देव	Shri Dasaratha Dev	2
श्री एस० एम० बनर्जी	Shri S. M. Banerjee	3
श्री जी० विश्वनाथन	Shri G. Viswanathan	3
श्री जगन्नाथ राव जोशी	Shri Jagannathrao Joshi	3
श्री श्यामनन्दन मिश्र	Shri Shyamnandan Mishra	3-4
प्रो० मधु दंडवते	Prof. Madhu Dandavate	4
श्री इब्राहीम सुलेमान सेट	Shri Ebrahim Sulaiman Sait	4
श्री अरविन्द नेताम	Shri Arvind Netam	4
श्री राम सहाय पांडे	Shri R. S. Pandey	4-5
डा० गोविन्द दास	Dr. Govind Das	5
श्री आर० डी० भंडारे	Shri R. D. Bhandare	5
श्री श्रीकृष्ण अग्रवाल	Shri Shrikrishna Agarwal	5-6
श्री रामकंवर	Shri Ramkanwar	6

लोक-सभा
LOK SABHA

सोमवार, 14 अगस्त 1972/23 श्रावण, 1894 (शक)

Monday, August 14, 1972/Sravana 23, 1894 (Saka)

लोक-सभा ग्यारह बजे समवेत हुई

The Lok-Sabha met at Eleven of the Clock

[**अध्यक्ष महोदय पीठासीन हुए**
Mr. Speaker *in the Chair*]

निधन सम्बन्धी उल्लेख
OBITUARY REFERENCE

अध्यक्ष महोदय: माननीय सदस्यगण, मुझे सभा को श्रीमती मिनिमाता अगमदास गुरू के दुखद निधन की सूचना देनी है। 11 अगस्त, 1972 की रात को 56 वर्ष की आयु में दिल्ली के निकट एक विमान दुर्घटना में उनकी मृत्यु हो गई ।

श्रीमती मिनिमाता अगमदास गुरू मध्य प्रदेश के जंजगीर निर्वाचन क्षेत्र से वर्तमान लोक सभा की सदस्य थीं । वह 1953 से 1970 तक पहली, दूसरी, तीसरी, और चौथी लोक सभा की भी सदस्य रहीं । वह अत्यंत शांत स्वभाव की थीं तथा उनका सभी आदर करते थे। वह हमारे समाज के पिछड़े वर्ग से आती थीं और उन्होंने लोक-सभा की सदस्यता के दौरान सदा हरिजनों, नारी जगत और दलित वर्ग की भलाई के लिये कार्य किया तथा दहेज प्रथा, बाल विवाह और छुआ-छूत जैसी कुरीतियों के उन्मूलन का प्रयत्न किया। जब भी उन्होंने सभा की कार्यवाही में भाग लिया तब ही अपनी लगन, विचारधारा और गाम्भीर्य से सभा को अत्यंत प्रभावित किया। उनका अपने राज्य में स्थापित अनेक समाज कल्याण तथा शिक्षा संस्थानों से संबंध था ।

हमें उनके निधन का भारी दुःख है तथा आशा है कि सभा मेरे साथ मिलकर उनके शोक संतप्त परिवार के प्रति अपनी सम्वेदना प्रकट करेगी।

प्रधान मंत्री तथा सभा की नेता (श्रीमती इन्दिरा गांधी) : श्रीमन्, यह हम सभी के लिये एक दुखद अवसर है। इससे फिर यही ज्ञात होता है कि जीवन कितना अनिश्चित है।

श्रीमती मिनिमाता एक आदर्श भारतीय महिला थी। यह मेरा सौभाग्य है कि उनसे बहुत वर्षों से मेरा निकट सम्पर्क रहा। वह मृदु भाषिणी, प्रतिष्ठित और सरल स्वभाव वाली महिला थीं और साथ ही साथ दृढ़प्रतिज्ञ और सक्रीय कार्य में विश्वास रखती थीं। उन्होंने गरीबों और दलितों के हितों की रक्षा करने में अनवरत प्रयत्न किया।

वह अपने कार्य के प्रति अत्यंत निष्ठावान तथा ईमानदार थीं जिनके कारण हम, सभा के माननीय सदस्य तथा जनता उनके प्रति श्रद्धा-नत थे। महोदय! जैसा कि आपने अभी उल्लेख किया, वह 20 वर्ष से संसद-सदस्य थीं तथा सदन की वरिष्ठतम महिला सदस्य थीं।

यद्यपि वह सभा में कम ही बोलती थीं तथापि जिन विषयों में उनकी रूचि थीं उनपर वह अपने विचारों को स्पष्टरूप से व्यक्त करती थीं और चर्चा में भाग लेते समय सदा प्रभावकारी और संगत भाषण देती थीं।

मध्य प्रदेश की विभिन्न समस्याओं, हमारे समाज में विद्यमान बुराइयों तथा सम्पूर्ण देश की अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के लोगों की समस्याओं के सम्बन्ध में उन्होने अपने निर्वाचन क्षेत्र में भी सक्रिय कार्य किया।

मृत्यु सदा ही दुखद होती है किन्तु इस अवसर पर और भी अधिक दुखद हो गयी है क्योंकि वह अचानक और दुखदायी ढंग से आई है। श्रीमती मिनिमाता आज हमारे साथ सभा की कार्यवाही में भाग लेने के लिये तथा कल रजत जयंती समारोह में भाग लेने के लिये दिल्ली आ रही थीं।

उनके निधन से संसद तथा हम सभी को हानि हुई है। मैं तो इसे अपनी व्यक्तिगत हानि मानती हूँ। हम सभी को गहन वेदना है और मैं आपसे अनुरोध करती हूं कि उनके परिवार को हमारी संवेदना पहुँचा दें।

श्री दशरथ देव (त्रिपुरा पूर्व) : यह अत्यन्त दुखद अवसर है और मैं अपनी पार्टी भारतीय साम्यवादी दल (मार्क्सवादी) की ओर से तथा अपनी ओर से स्वयं को श्रीमती मिनिमाता अगमदास गुरू के दुखद निधन पर, जो इस सभा की 1953 से सदस्य थीं आपके तथा प्रधान मंत्री के द्वारा व्यक्त किये गये गहन दुःख में सम्मिलित होता हूँ।

मैं श्रीमती मिनिमाता को निकट से जानता था क्योंकि मैं 1953 से 1961 तक नार्थ एवेन्यु में उनके पड़ौस ही में रहता था। उन्हें बच्चों से भी अत्यन्त प्रेम था तथा उन्होंने विशेषकर अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजातियों और हरीजनों के बीच मे रहकर कार्य किया।

जहाँ तक मैं जानता हूँ, वह एक कुशल समाज सेविका थीं तथा उनका मुख्य कार्यक्षेत्र पिछड़े वर्गों के लोगों का उद्धार था। उनके निधन से देश को बड़ी हानि हुई है।

मेरा निवेदन है कि आप हमारी गहन सम्वेदना श्रीमती मिनिमाता के दुःख संतप्त परिवार तक पहुंचा दें।

श्री एस० एम० बनर्जी (कानपुर) : अध्यक्ष महोदय, मैं श्रीमती मिनिमाता को उसी दिन से जानता था जिसदिन मैंने 1957 में संसद में प्रवेश किया था। मेरे लिये वह सादा जीवन की प्रतीक थीं। उनके हृदय में साधारण व्यक्तियों के लिये, विशेषकर दलितों तथा जिन्हें समाज ने अभी तक उचित स्थान नहीं दिया है, बड़ी करूणा थी।

उनका बहुत से समाज कल्याण संगठनों से सम्बन्ध था। मुझे याद है कि इस सभा में जब हरिजनों और महिलाओं पर अत्याचार के प्रश्न पर चर्चा हुई थी तो उन्होंने कितना रोष प्रकट किया था। मुझे वह धरना भी याद है जब अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के आयुक्त के प्रतिवेदन पर चर्चा के लिये कम समय दिया गया था तो वह दृढ़ता से खड़ी हो गई थीं तथा चर्चा के लिये अधिक समय की मांग की थीं, यद्यपि वह शांत स्वभाव की महिला थीं।

अत्यंत दुःख की बात है कि उनकी मृत्यु असामान्य ढ़ंग से हुई है। इस दुर्घटना से मुझे कानपुर से आने वाले एक सदस्य स्वर्गीय श्री हरिहर नाथ शास्त्री की असमय दुखद मृत्यु की याद आती है जिनकी मृत्यु भी ऐसी ही परिस्थितियों में हुई थीं।

अपनी ओर से तथा अपने दल की ओर से मैं हार्दिक संवेदना प्रकट करता हूँ तथा निवेदन करता हूँ कि श्रीमती मिनिमाता के शोक संतप्त परिवार तक हमारी संवेदना पहुंचा दें।

श्री जी० विश्वनाथन (वापड़ीवाश) : यह दुखद अवसर है कि हमने स्वंतत्रता की 25वीं वर्षगांठ पर अपने बीच से एक वरिष्ठतम सदस्य खो दिया।

हमने अनेक अवसरों पर सभा में तथा बाहर और समितियों की बैठकों में विभिन्न हैसियतों से श्रीमती मिनिमाता के साथ कार्य किया है। यहाँ तक कि वह एक ही निर्वाचन क्षेत्र से इस सभा के लिये लगातार पांच बार सदस्य चुनी गई, इंगित करता है कि वह जनता में तथा विशेषकर आदिम क्षेत्रों में कितनी लोक प्रिय थीं तथा उन पर उनका कितना प्रभाव था।

अपनी ओर से तथा अपनी पार्टी की ओर से मैं आपके द्वारा व्यक्त की गई गहन वेदना के साथ स्वयं को सम्बद्ध करता हूँ तथा निवेदन करता हूँ कि उनके शोक संतप्त परिवार तक हमारी सम्वेदना पहुचा दें।

Shri Jagannathrao Joshi (Shajapur) : It is correct that whosoever is born has to die; but death becomes more sorrowful when it is untimely and comes suddenly. I have also been coming from Madhya Pradesh since 1967 and had several occasions to meet her. She was an emblem of simplicity and politeness. No one can forget her lifelong tenderness of feelings for the down trodden and her services for them. Her demire is irrecoverable loss to Madhya Pradesh.

On behalf of my Party and on my own, I associate myself with the deep sorrow expressed in the House and pray that God may give peace to her soul. I request you to convey our condolences to her bereaved family.

Shri Shyamnandan Mishra (Bagusaria) : Mr. Speaker, Sir, the sudden demire of Shrimati Minimata is a great loss to the Parliament. She was blessed with the virtues of simplicity, modesty and dignity. She remained a real wellwisher of the peasants upto the time she breathed

[Shri Shyamnandan Mishra]

her last. She lived in Delhi for a long time but the ostentatious life of Delhi could not affect her way of simple living. She possessed a peculiar calmness and balance of mind. She was so soft-spoken that every word coming from her mouth was like a drop of dew. I think, one can be able to possess such simplicity as was possessed by her only after constant perseverance. We are deeply aggrieved to think that she will not be with us any more.

I am one of those who knew her from the day when she came to Parliament. I was also here before she came. Therefore, for all of us to whom she was closely known, her demire is a personal loss.

On behalf of my Party and on my own behalf, I pay homage to the departed soul, and express our condolence to her bereaved family.

प्रो० मधु दंडवते (राजापुर) : अध्यक्ष महोदय, मृत्यु तो सभी प्रकार से दुखदायी है, किन्तु जब किसी की इस प्रकार मृत्यु होती है तो उसका दुःख और भी अधिक हो जाता है । वह एक ऐसी महिला थीं जिन्होंने समाज के दलित वर्ग तथा नारी जाति के कष्टों का निवारण करने का प्रयत्न किया किन्तु उनके जीवन का अन्त ही दुखांत बनकर रह गया । मेरे विचार से इस सभा के सभी सदस्य तथा शेष जनता उनके निधन पर दुखी होगी क्योंकि श्रीमती मिनिमाता ने स्वर्गीया कस्तूरबा के पदचिन्हों पर चलकर निष्ठापूर्वक जनता की सेवा की ।

समाजवादी दल की ओर से मैं गहन सम्वेदना प्रकट करता हूँ तथा निवेदन करता हूँ कि उनके शोक संतप्त परिवार तक हमारी सम्वेदना पहुंचा दें ।

श्री इब्राहीम सुलेमान सेट (कोजीकोड) : श्रीमन्, आपके द्वारा तथा प्रधान मंत्री और अन्य सहयोगियों के द्वारा श्रीमती मिनिमाता की कारुणिक मृत्यु पर सभा में व्यक्त की गई दुःखपूर्ण भावनाओं के साथ मैं स्वयं को भी सम्बद्ध करता हूँ । हम सभी जानते हैं कि उनका व्यक्तित्व सराहनीय गुणों से सम्पन्न था । वह विनम्र, सरल और गरिमा सम्पन्न थीं । उन्होंने दलितों तथा पिछड़े हुए वर्गों की निष्ठा और लगन से सेवा की थी । उनके निधन से न केवल पिछड़े वर्गों को हानि हुई है वरन् सारे देश को क्षति पहुंची है ।

आपके माध्यम से मैं मुस्लिम लीग की ओर से उनके शोक विह्वल परिवार के प्रति सम्वेदना प्रकट करता हूं तथा निवेदन करता हूँ कि आप उनके परिवार तक हमारी गहन सम्वेदना पहुंचा दें ।

Shri Arvind Netam (Kanker) : Mr. Speaker, Sir, Shrimati Minimata is not with us now. Her tragic demire is an irreparable loss which cannot be recovered. She was very closed to me. She was a lovable mother of Chhattisgarh area in Madhya Pradesh. The people of Chhattisgarh have lost their mother. She was modest, dignified and soft-spoken by nature.

I pray that God may bless the departed soul with peace.

Shri Ramsahai Pandey (Rajnandgaon) : Mr. Speaker, Sir, Shrimati Minimata met a tragic death which was so sudden that it is difficult to believe. She took an air-flight from Bhopal and she would have been at Parliament. She was known as mother of Chhattisgarh.

She was modest and dignified in her manners. She commanded respect of all sides. Death is certain and it is inevitable end of every physical being. Since the mother of Chhattisgarh met death in such a gruesome manner, the paws of death have become althe more. We can not even see her deadbody. It was reduced to pieces and became distorted. Her last ceremoney took place yesterday.

The people of Chhattisgarh can never forget her services. As I have said, she was their mother. To day the people of Chhattisgarh weaping because they have lost their mother who was kind to them and who had rendered them great services. They know that now she will not come to look after them. Shrimati Minimata was not only good at politics; she was not motherly to the people of Chhattisgarh, the whole Satnami Samaj has became motherless because she was a social reformer and did a great deal for the upliftment and progress of the rural society. My Constituency is by the side of her Constituency. I have personally noticed her morher-like popularity in Chhattisgarh.

With these words, I express my deep condolence, and pray that God may bestow peace to the departed soul and consolation to her bereaved family.

Dr. Govind Das (Jabalpur) : Mr Speaker, Sir, Shrimati Minimata has been elected from Madhya Pradesh continuously for every time so far. It shows her popularity and her performance. Women awakening in our country actually started after 1920 when Gandhiji began to lead the country. Every state was influenced by him. Awakening in public life of Mahakoshal in Madhya Pradesh started after 1920. Smt. Minimata came from Chhattisgarh in Madhya Pradesh and Chhattisgarh was the main area where she worked a lot. She commanded great respect of her community and of Congress Party. Few women can get such popularity as she did.

I pay my homage to her and express my deep condolence to her son.

श्री आर० डी० भंडारे (बम्बई मध्य): अध्यक्ष महोदय, हम हिन्दू समाज के सतनामी सम्प्रदाय की धार्मिक नेता श्रीमती मिनिमाता के निधन पर हार्दिक दु:ख व्यक्त करते हैं । यह सच है कि महान् आत्माओं का, जो समाज की सेवा करती हैं, सदा दुखपूर्ण ढ़ंग से निधन होता है । हमें दु:ख है तथा हम समझते हैं कि हमने अपने बीच से ऐसी ज्योति को खो दिया है जो दलितों तथा कम सुविधा सम्पन्न व्यक्तियों को राह दिखाती थीं जैसा कि आपने तथा प्रधान मंत्री ने और अन्य माननीय सदस्यों ने कहा, वह एक महान समाज सेविका थीं । किन्तु वह यहाँ भी तथा बाहर भी शांत स्वभाव वाली तथा सरल प्रकृति वाली महिला थीं । परन्तु शांत और सरल स्वभाव होने पर भी वह अन्याय के प्रति जूझ जाती थीं । चूंकि वह समाज की सेवा करती रहीं अत: उनकी आत्मा को शांति ही मिलेगी । मैं उनको श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ ।

Shri Shrikrishna Agrawal (Mahasamund) : Mr. Speaker, Sir, the sudden demire of Shrimati Minimata has caused a great loss to India particularly the Chhattisgarh region of our country because she had rendered a great service for the welfare of the people of that area during her social and political life-span. She was the religious head of Satnami sect which is down-trodden in Chhattisgarh. My Constituency and her Constituency are situated side by side. I was very close to her. She treated us like her children. Her relations with the people of her

[Shri Shrikrishna Agrawal]

own Constituency and that of mine were very amiable. On this occasion, I pay my homage to her and pray that God may console her bereaved family.

Shri Ramkanwar (Tonk) : Mr. Speaker, Sir, I express my deep sorrow at the tragic death of Shrimati Minimata due to the air crash. Shrimati Minimata represented the backward class. Her demire is a great loss not only to Madhya Pradesh but to the Harijans, tribals and the poor people throughout the country. In her absence in Lok Sabha to-day I feel highly grieved. On behalf of Swatantra Party and on my own behalf, I associate myself with the sentiments expressed by the Prime Minister and pray that God may bestow peace on the departed soul.

अध्यक्ष महोदय : उनके प्रति सम्मान व्यक्त करते हुये सदस्यगण उनकी स्मृति में कुछ देर मौन खड़े रहेंगे ।

तत्पश्चात सदस्यगण कुछ देर मौन खड़े रहे ।

The Members then stood in silence for a short while.

अध्यक्ष महोदय : श्रीमती मिनिमाता के दुखदायी निधन को ध्यान में रखते हुये जिसे सुनकर हम सभी को भारी आघात पहुंचा है, तथा इस बात को भी देखते हुये कि वह लोक सभा की बहुत पुरानी सदस्य थीं और १९५२ से लेकर लोकसभा की अब तक सदस्य रहीं, जैसी कि बहुत से सदस्यों ने इच्छा व्यक्त की है, मैं प्रस्ताव करता हूँ कि उनके प्रति दुःख तथा सम्मान प्रकट करने के लिये अब सभा को स्थगित किया जाए ।

एक माननीय सदस्य : सेंट्रल हाल के समारोह के बारे में क्या होगा ?

अध्यक्ष महोदय : वह वहीं होगा । राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधान मंत्री तथा मेरे भाषण के अतिरिक्त शेष सभी कार्यक्रम को रद्द कर दिया गया है । सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा भोज आदि सभी कार्यक्रम रद्द हो गये हैं। सेंट्रल हाल में 11 बजे म० पू० पर कार्यक्रम आरम्भ होगा जो एक घंटे तक चलेगा ।

अब सभा बुधवार 11 म० पू० तक के लिये स्थगित होती है ।

इसके बाद लोक-सभा बुधवार, 16 अगस्त, 1972/25 श्रावण, 1894 (शक) के 11 बजे म०पू० तक के लिये स्थगित हुई ।

The Lok Sabha then adjourned till Eleven of the Clock on Wednesday, the August 16, 1972/Sravana 25, 1894 (Saka).

NAI DUNIA PRESS, INDORE-490-9-1972